Subject- AI&AS (Ancient history)

BA-III Hons
Paper V

page (1)

श्रीलंका में बौद्धधर्म

वर्तमान समय में श्रीलंका एक पृथक एवं सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न देश है पर सांस्कृतिक दृष्टि से उसे भारत का एक भाग समझा जा सकता है। रामायण की कथा में रावण जिस लंका का था वह श्रीलंका ही थी। लंका भारत का सबसे पुराना उपनिवेश है, और ईस्वी सन् के प्रारम्भ से कई सदी पहले भारतीयों ने वहाँ अपना राज्य स्थापित कर लिया था।

श्रीलंका की प्राचीन अनुश्रुति के अनुसार लाट (गुजरात) देश का राजकुमार विजय सिंह अपने साथियों के साथ उसी साल लंका में उतरा था, जिस साल कि भगवान बुद्ध का हुआ था। बौद्ध धर्म का शुरुआत लगभग 483 ई० पू० में श्रीलंका में हो गया था। राजा अशोक के शिलालेखों में सी-इली-द्वीप का का उल्लेख है। श्रीलंका में प्रथम भारतीय उपनिवेश को स्थापित करनेवाला कुमार विजयसिंह लाट (गुजरात) का निवासी था।

लंका में बौद्धधर्म का प्रवेश- देवानांपिय तिस्स के समय में हुआ था। अशोक के पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा ने इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण कार्य किया। अशोक के समय में आचार्य मोग्गलिपुत्त तिस्स के अध्यक्षता में बौद्धों की जो श्रीलंका में तीसरी महासभा हुई थी, उसमें बौद्धधर्म के प्रचार के लिए एक योजना भी तैयार की गई थी। इस योजना के अनुसार भिन्न-भिन्न देशों में प्रचारकों की मण्डलियाँ भेजी गई थी उनके नाम सामन्तपासादिका ग्रन्थ में विद्यमान है।

लंका के राजा देवानांपिय तिस्स ने जो दूत मण्डल अशोक के पास भेजा था, उसका नेता तिस्स का भानजा महाअरिट्ठ था। यह पाँच मास तक यह दूत मण्डल पाटलिपुत्र में रहा। उसे विदा करते हुए अशोक ने महाअरिट्ठ द्वारा तिस्स के पास संदेश भेजा — " मैं बुद्ध की

मैं बुद्ध की शरण में चला गया हूँ, मैं धर्म की शरण में चला गया हूँ मैं संघ की शरण में चला गया हूँ। मैंने शाक्यमुनि के धर्म का उपासक होने का व्रत ले लिया है। तुम भी इसी बुद्ध, धर्म तथा संघ के त्रिरत्न का आश्रय लेने के लिए अपने मन को तैयार करो। बुद्ध शरण में आने का निश्चय करो।" अशोक का यह सन्देश लेकर महाअरिष्ट लंका वापस चला गया। इधर महेन्द्र लंका में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने साथियों के साथ जाने का कटिबद्ध था। महेन्द्र की माता उन दिनों विदिशा में रह रही थी। वह अपने पुत्र से मिल-कर बहुत प्रसन्न हुई। विदिशा में महेन्द्र अपनी माता के बनवाये हुए वैदिश गिरि-महाविहार में ही ठहरा। विदिशा से महेन्द्र सीधा लंका गया। वहाँ अनुराधपुर से आठ मील पूर्व की ओर जिस जगह वह उतरा, उसका नाम 'महिन्दतल' पड़ गया। अशोक के सन्देश को प्राप्त कर लंका का राजा तिष्य पहले ही बौद्ध धर्म के प्रति अनुराग रखने लग गया था। जब उसे महेन्द्र के आगमन का समाचार मिला, तो वह उससे मिलने के लिए गया। महेन्द्र ने उसे चूलहस्तिपदोपम सूत का उपदेश दिया। उपदेश को सुनकर तिष्य ने चालीस हजार मनुष्यों के साथ बौद्ध-धर्म की दीक्षा ग्रहण कर ली।

राजकुमारी अनुला ने भी अपनी सहचारियों के साथ बौद्ध धर्म में दीक्षित होने की इच्छा प्रकट की, पर उसे निराश होना पड़ा। महेन्द्र ने तिष्य से कहा — 'महाराज हमें स्त्रियों को प्रव्रज्या देना विहित नहीं है। पाटलिपुत्र में मेरी बहिन संघमित्रा रहती है। उसे बुलवाओ। महाराज, ऐसा पत्र भेजो, जिससे संघमित्रा बोधि (बोधगया के बोधिवृक्ष की शाखा) भी साथ लेती आवे।" यह सुनकर राजा तिष्य ने महाअरिष्ट के नेतृत्व में एक दूतमण्डल फिर पाटलिपुत्र भेजा। संघमित्रा अशोक से अनुमति लेकर बोधिवृक्ष की शाखा के

सम्मानपूर्वक लंका में आरोपित किया गया। इस भारत के लंका पहुंचाने का वर्णन लंका के बौद्ध ग्रन्थों में विशद रूप से किया गया है। अनुराधपुर के महाविहार में यह वृक्ष अब तक भी विद्यमान है और संसार के सबसे पुराने वृक्षों में एक है। राजा तिस्स ने संघमित्रा के निवास के लिए एक विहार बनवाया था जो "उपासिका-विहार" कहा जाता था। जब यही संघमित्रा लंका पहुँच गई तो राजकुमारी अनुला ने पाँच सौ राजकन्याओं तथा पाँच सौ अन्तःपुर की स्त्रियों के साथ उससे प्रव्रज्या ग्रहण की। लंका में बौद्ध धर्म का प्रचार करने वाले इन भाई-बहनों की जब मृत्यु हुई तो उस देश के राजसिंहासन पर राजा उत्तिय विराजमान थे। तिस्स की मृत्यु पहले हो चुकी थी। लंका में बौद्ध धर्म के प्रचार का श्रेय भिक्षु महेन्द्र और संघमित्रा को ही है।

अतः उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि लंका में बौद्ध धर्म प्रभाव का योगदान भारत निवासियों का ही है। लंका निवासियों ने बौद्ध धर्म के शरण में बहुत संतुष्ट-नहीं आकर इस धर्म का व्रत लिया। अब लंका निवासी बौद्ध धर्म के सम्पर्क में पूर्ण रूप से आकर अनुराग रखने लगे। लंका में बौद्ध धर्म को हजारों लोग अपनाकर भारतीय संस्कृति के प्रभाव में आ गए। इनमें अशोक महत्वपूर्ण योगदान है। लंका के राजा देवानांप्रिय स्वयं इस सन्दर्भ में अशोक से सम्पर्क बनाकर बौद्ध धर्म के प्रति आस्था का परिचय दिया। भारत और लंका के सम्बन्धों का विवरण रामायण में भी मिलता है। लंका में भारत निवासी ~~[illegible]~~ उपनिवेश बनाकर बौद्ध धर्म के प्रचार एवं प्रगति में लग गए। परिणामतः लंका में बौद्ध धर्म फैलने लगा। लंका राजा बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया। धीरे-धीरे बौद्ध

सारे द्वीप में यह धर्म फैल गया। बौद्ध धर्म के विकास के कारण ही भारत और लंका के सांस्कृतिक और राजनीतिक सम्बन्ध घनिष्ठ हो गए। सारी लंका में बौद्ध ~~विहार~~ विहार बड़ी संख्या में पाए गये। अतः लंका में बौद्ध एक स्थाई रूप में आ गया। इसका योगदान भारतवासियों का है।

Dr. Birendra Prasad Singh
Associate Professor
Deptt. of AI&AS
Shershah College Sasaram

Scanned with CamScanner